भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 21 अंक : 4	सम्पादक : **प्रभाकर राव**	वार्षिक चंदा : 50.00
गुरुवार, 26.4. 98	अप्रैल–1998	प्रति अंक : 05.00

4 मई.....प.पू.हरिप्रसादस्वामिजी की जन्म जयंती!

ओहो! 4 मई.....यानि आत्मीय सम्राट प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्म जयंती! और.....हम सभी के लिए अत्यधिक आनंद की बात है कि पिछले वर्ष पादरा गाँव में जन्म जयंती के अवसर पर मूसलाधार बरसती बरसात में प.पू.स्वामिजी की परावाणी का रसपान करते भक्त समुदाय को निहार कर ही धर्मज गांव के, पर फिलहाल बोरसद में रहते माने हुए उद्योगपति व आत्मीय स्वजन श्री पियुषभाई के आग्रह से इस वर्ष धर्मज में यह जयंती आत्मीय दिन के रूप में मनाएंगे।

ऐसी जयंती का अवसर यानि-गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना करके अपनी कैसी भी जड़ता से मुक्त होने का अनमोल मौका! ब्र.स्व. योगीजी महाराज ने प.पू. स्वामिजी के रूप में गुणातीत समाज को एक अनमोल भेंट दी है.....आज अपने वर्तन एवं वाणी द्वारा उन्होंने अपने संबंध वालों को आत्मीयता के धोध में भिगो दिया है और....इसी के लिए ही निरन्तर उनकी हर चेष्टा व उद्यम है। सच कहें तो-हम सब खूब भाग्यशाली हैं जो कि ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी ने हमें प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारी स्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई जैसी प्रभुधारक विभूतियों की पहचान कराई, उनकी गोद में बिठा दिया और इससे भी अधिक ये विभूतियाँ स्वयं भी उनसे हमारा संबंध दृढ़ कराने, हमें महिमासभर बनाने और हमें जो भव्य प्राप्ति हुई है-उसकी अनुभूति कराने ही लगातार प्रयास कर रही है..... इस वर्ष धूलेन्डी के परम पवित्र अवसर पर प.पू.स्वामिजी द्वारा किया गया आशिष प्रवचन कुछ ऐसा ही दर्शाता हैं। तो आईये, 4 मई-प.पू. स्वामिजी की जन्म जयंती के महामंगलकारी अवसर पर उनकी ही परावाणी निहारें और आत्मसात करने कृतनिश्चयी बनें.....

⚹ जिसे सच में सुखी होना हो उसे-

स्वामी की बातें और वचनामृत में अविश्वास नहीं आने देना-स्वप्न में भी नहीं। तुम नहीं मान पाते उसका अर्थ यह नहीं कि महाराज की वाणी मिथ्या है। पहले प्रकरण की पहली बात-भगवान और साधु की.....इस बात के मुताबिक हम अक्षरधाम के हैं। सभी शब्द में हम सब आ गए! संबंध वाले सभी आ गए। फिर आगे कहा-यदि इस बात में अविश्वास होगा, तो जीव दुर्बल रह जाएगा।

वच.म. 13 में भगवान स्वामिनारायण ने अपने प्यारे बच्चों-परमहंसों की कसम खाकर कहा-प्रकाश का वह स्वरूप मेरे हृदय में अखंडित है। वहां एक भगवान की मूर्ति हैं और तुम सब वहाँ बैठे हो। यह बात झूठ नहीं है। कोई यूं माने कि मैं शिकागो में-टोरन्टो में-हरिधाम में हूँ-यह अज्ञान है।

⚹ मैं अक्षरधाम का मुक्त यानि क्या?

जिसकी दस इंद्रियाँ और चार अंतःकरण भगवान के सन्मुख हों, भगवान में डूबे हुए हों वह अक्षरधाम का मुक्त।

आँखें भगवान का दर्शन करें.....

कान कथावार्ता ही सुनें .....

जीभ भगवान का गुणगान गाये.....महिमा का ही स्वाद ले.....प्रभु के ही भाव से वच.म.41 के मुताबिक सेवा,

दर्शन, समागम किया करे.....

जीव में एक ही आकार! सहजानंदस्वामी के सिवा अन्य कोई नहीं।

भेददृष्टि नहीं, मेरा-तेरा नहीं।

हृदय पर भगवान का ही प्रभाव पड़े, जगत का प्रभाव नहीं-तनिक भी नहीं। हम सब लोगों की प्रसन्नता-सर्टीफिकेट जुटाने सत्संग करते हैं। लोक में से-जगत में से ही फरूख नहीं होते।

* यूं मानना की प्रभु! तेरा संबंध हुआ, सो-मेरी आँख, कान, जीभ बदल गई। बदल जानी ही चाहिए, लेकिन-

नहीं बदलते.....क्योंकि अविश्वास है।

नहीं बदलते.....क्योंकि शुरुआत ही नहीं करी।

नहीं बदलते.....क्योंकि हमें ऐसा जीना ही नहीं है।

नहीं बदलते.....क्योंकि हमें सुखी होना ही नहीं है।

नहीं बदलते.....क्योंकि हमें चौधराट करनी है।

* पर दृढ़ संकल्प करोगे तो बदल जाएंगे ही। तीन बात करता हूँ, ध्यान से सुनना-

श्री रामकृष्ण परमहंसदेव ने सातों संप्रदाय के अनुभव किए। मस्जिद के आगे बैठे, नमाज शुरु करी-तो ठीक उसी की तरह, अंदर से आवाज आती। उनकी उपासना काली माता की थी-परन्तु आवाज आती अल्लाह की। वे अल्लाह के आकाररूप हो गए।

बंगाल की धरती पर सखी संप्रदाय चलता है। सखी संप्रदाय यानि क्या? मीरा एक ऐसी कक्षा पर आकर अनुभव करके ऐसे भाव में लय हो गई, जहां पुरुष तो केवल एक कृष्ण हैं, बाकी सभी गोपियाँ हैं। वह एक ऐसी व्यक्ति निकली, जिसने अनुभव किया कि स्त्री होंगे तो कृष्ण में सहज ही लय हो पायेंगे।

मीरां ने क्या कहाः स्त्री का देह धारण करो और स्त्री-भाव प्रकटा कर कृष्ण में लय हो जाओ।

सो, रामकृष्ण परमहंसदेव ने सखी संप्रदाय की इसी रीति का प्रयोग किया। स्त्री-भाव में वे इतने अत्यधिक लीन हो गये और छः महिने तक मन-बुद्धि को स्त्री के आकार में ढाल कर कृष्ण लीला देखी व कृष्ण के दर्शन किए! पूरे ओतप्रोत हो गये। देह को ऐसी कक्षा तक बदल दिया कि उन्होंने स्त्री के दैहिक धर्म तक का अनुभव किया! कैसे भाव में पहुँच गए होंगे वे!

गुणातीतानंदस्वामी ने क्या कहा - निजात्मानम ब्रह्मरूपम...। स्थूल नहीं सूक्ष्म नहीं, कारण भी नहीं, मैं अक्षरब्रह्म-इस भाव से कृष्ण की सेवा करो, लय हो जाओ, ओतप्रोत हो जाओ.....

रामभंडेरी घर से निकला। गुणातीतानंदस्वामी ने स्वप्न में दर्शन दिए और उस दर्शन में जूनागढ़ की धरती के सभी मुक्तों को प्रकाशयुक्त दिखाया फिर रामभंडेरी जब जूनागढ़ की ओर चले तो वही एक आकार से! घाय, भैंस, पेड़ों में-सब में से प्रकाश ही दिखाई पड़ा और उसी विचार में चलते रहे। तीन दिन लगे पहुँचने में। तीसरे दिन जब जूनागढ़ पहुँचे तब शाम हुई थी। गुणातीतानंदस्वामीजी सभा करके बैठे थे। पाँच बजे का समय था। गुणातीतानंद स्वमिजी का दर्शन प्रकाशयुक्त हुआ! वह सोच में बड़ा कि-स्वामि का भगवा वस्त्र कहां गया? फिर, गुणातीतानंद स्वामिजी को प्रकाशयुक्त महाराज की मूर्ति के स्वरूप में देखा।

लेकिन यह हुआ कैसे? लगातार 72 घंटे तक मनन-चिंतन करने से ये हुआ कैसे? लगातार 72 घंटे तक मनन-चिंतन करने से यह अनुभव गुणातीतानंदस्वामिजी ने रामभंडेरी को कराया और फिर..... गुणातीतानंद-स्वामिजी ने उसे पहले जैसी ही अवस्था में ला दिया। मूल स्वरूप में वापिस आने के बाद रामभंडेरी ने स्वामी को कहा-स्वामी कब से ढूंढ रहा था। दंडवत् किसे करूँ? चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई पड़ता था।

* रोज सुबह पूजा के समय दस मिनिट एक विचार में रहना। मेरा बाप अक्षरधाम का है। वच.म. 13 के मुताबिक वह ज्योतिर्मय स्वरूप है एवं खानदान है। खानदानी यानि? लाख गुनाह किए हों और लाख बार प्रार्थना करी हो, फिर भी वो माफी दें, देते हैं और देंगे ही! वो तुम्हारा कभी भी कुछ नोट नहीं करते।

उसका दूसरा अर्थ हैः वो तुम्हारी भलाई करेगा ही।

उसका तीसरा अर्थ हैः वो तुम्हारा अहित करेगा ही नहीं।

उसका चौथा अर्थ हैः मैं तुम्हारा ही रहूँगा। तुम मेरे रहो या नहीं-कोई हर्जा नहीं। इसे कहा जाए-खानदान व्यक्ति! दुश्मन को भी घर बुला कर भोजन कराए उसे कहा जाए अजातशत्रु।

अक्षरब्रह्म की और नारायण की वह खानदानी कल्पनातीत है। उस खानदानी की सोच में रह कर गुणातीत पुरुषों के ऐसे चरित्रों में हम अपने आपको पिरोए रखें।

पूजा करने बैठे तब ऐसे भाव में रहें कि मैं अक्षरधाम का मुक्त ही हूँ। मेरे सम्मुख महाराज, स्वामी और गुणातीत पुरुष ही हैं। वे एक और अद्वितीय नारायण स्वरूप ही है। मैं स्त्री नहीं,पुरुष नहीं, मैं तो प्रकाशयुक्त हूँ। यूँ मान कर

फिर भजन करना। मैं स्वामी, तू नारायण-पहले प्रकरण की पहली बात और आखिरी बात या वच.ग.म. 23 या अमदावाद 2,3 अंत्य. 38 जैसे वचनामृत की समझ में रहने की थोड़ी कोशिश करना। जब तक अपने आपको पुरुष मानोगे तब तक स्त्री रहेगी ही। मैं अक्षरधाम का-यूं मानोगे तो सामने भगवान होंगे ही। यूं दस मिनिट प्रार्थना करना ही। इसके सिवा कोई चारा नहीं। रामकृष्ण परमहंसदेव, मीरां, रामभंडेरी, कार्ल मार्क्स यदि अनुभव कर सकें तो हम क्यों नहीं? तुम सद्विचार पकड़े रखोगे तो भगवान उसका फल देंगे, देंगे और देंगे ही।

जैसे-जैसे यह भाव तुम्हारे हृदय में स्थिर करने का प्रयत्न करोगे,वैसे-वैसे प्रभु तुम्हारे हृदय में सद्विचार प्रगटायेंगे। फिर इन बातों की जैसे-जैसे जुगाली करते जाओगे, वैसे-वैसे प्रभु हमें महिमा के विचार देंगे।

याज्ञवलक्य ऋषि ने निर्णय किया कि अब शरीर छोड़ देना है।उसकी पत्नियाँ थी। मैत्री और गार्गी।गार्गी किसी उच्च सीमा को पाई हुई थी। स्वधामगमन की पूर्व संध्या को ऋषि ने दोनों पत्नियों को बैठा कर कहा-तू यह संभालना, तेरा यह, तेरा यह.....डिविजन ऑफ प्रॉपर्टी! तब गार्गी ने कहा-नाशवंत चीजें मुझे नहीं चाहिए, जो अविनाशी हो वह दो। मैं तुम्हारे पीछे आने वाली हूँ। कैसी समझदारी होगी यह!

ऐसी समझदारी हम सब के जीव में दृढ़ हो जाये और हृदय भक्ति से रंगा हुआ रहे-ऐसी धूलेन्डी के पवित्र पर्व पर गुरुहरि के श्रीचरणों में सब की ओर से प्रार्थना.....

✡✡✡✡✡

स्वामी की बातें

612. जीव को जो उल्टा स्वभाव है। खाना-पीना, पैसा कमाना व विषय भोगना इनमें ही वह लगा हुआ है। पर, यदि रुपए हों तो उनसे गेहूँ खरीद कर, वो खाकर प्रभु भजने चाहिए। सौ उपाय करके बाजरा इकट्ठा करना-चाहे खेती करके, नौकरी करके या किसी से साझेदारी करके भी एक बार तो इकट्ठा कर लेना। फिर हायतौबा नहीं करनी, भगवान भज लेने। अरे! यह ना भी कर पाओ तो, मंदिर में बाजरा खूब है; सो चार महीने भले ही घर रुक कर भगवान भजने जरूर आना। फिर ऐसा समागम नहीं मिलेगा। जहां उत्तम वक्ता हों वहां समागम कर लेना और बाद में जो चीजें खाई हो वह याद करा करनी। ऐसा महाराज ने शिक्षापत्री में कहा है और वचनामृत में भी कहा है कि समागम के बिना ज्ञान-आ सकता नहीं व देशकालादि आठ में संग को सबसे अधिक कहा है। अन्य सात यदि खराब हों, पर एक संग यदि अच्छा मिल जाये तो बड़े पुरुष (वे सातों) अच्छे कर देते हैं। सो बार-बार संग करना चाहिए। इसी में सभी बातें आ जाती हैं।

-प्र. 6,54

613. जिसे जो प्यारा हो, वो अपने शिष्य को देता है। बाप के हृदय में स्त्री है, तो लड़के के हृदय में भी वही डाल देता है। ऐसे ही साधु को भगवान प्यारे हैं, तो जीव के हृदय में भगवान डाल देता है। खाये बिना जैसे भूख नहीं मिटती व सेके बिना ठंड नहीं जाती तथा सूर्य के बिना अंधेरा नहीं जाता, वैसे ही समागम के बिना अज्ञान नहीं टलता। जो खुद पढ़ा हुआ हो, वो ही दूसरे को पढ़ा सकता है। परन्तु खुद अनपढ़ हो, वह क्या पढ़ायेगा? क्योंकि उसे जड़ से ही विद्या नहीं, वह दूसरों को भला देगा कहाँ से? गुरु बिना ज्ञान नहीं, गुरु बिन ध्यान नहीं; गुरु बिना आत्मविचार नहीं लहत है, यूं न सदगुरु के बिना कुछ भी होता नहीं.....ऐसे साधु का समागम करने से ही छुटकारा है, सो वह करना। वह भी-कार्य साधयामि वा देहं पातयामि-यूं करना, तब वे राजी होते है। समागम करने से ऐसा फर्क पड़ता है जैसे कार्तिक स्वामी ने पृथ्वी की परिक्रमा की और गणपतिजी ने पार्वती के कहने से गाय की करी, पर वह भी पृथ्वी की करी बराबर हुई। देखो कितना फर्क पड़ा? करोंड़ जन्म तक अंतर्दृष्टि करने पर जो ना हो पाये, वह एक महीने में हो जाए; ऐसा इस समागम में बल है।सो, हमारा तो यह सिद्धान्त है और महाराज ने भी कहा कि कोई भी वजह लेकर ऐसा साधु के बीच जन्म धरने की इच्छा रखता हूँ और ऐसा जन्म तो हमें ही मिला है।

-प्र. 6,55

614. ये भगवान बहुत बड़े प्रगट हुए! इन्होंने अन्य अवतारों जैसे तो अपने साधु और सत्संगी द्वारा चमत्कार दिखाये और स्वयं ने जो नरनारायण के बारे लिखा है, वह तो जैसे किसी गांव में जाना हो तो उसका जानकार लेना पड़े; यूं वे स्वयं कभी आये नहीं थे और भरतखंड

नरनारायण देव का कहा जाए, सो महाराज ने इन्हें गाईड के रूप में लिया है। यह मनुष्यपन का भाव है यूं मानना। यह बात महाराज ने भी करी है। ये सारी बातें तो नई हैं। साधु नए,नियम नए! सो महाराज कहते कि यह नियम और ये साधु ये दो हम अक्षरधाम में से लाए हैं।

प्र. 6,56

615. गुरु की चीजें सेवक को नहीं इस्तेमाल करनी चाहिए। रामचंद्रजी जब धरती पर सोयें, तो भरतजी एक हाथ जितनी धरती खोद कर नीचे सोते। शिवजी भी भगवान के भोगने के पदार्थ खुद नहीं भोगते और संग का फर्क कि एक (जगत से) उखाड़ता है और एक चिपकाता है।

प्र. 6, 57

616. इस सत्संग में तीन प्रकार हैं। सत्संगी हो उसे कुसंगी कर डाले और अंतःदृष्टि करता हो तो उसे बाह्यदृष्टि करा दे व कोई व्यवहार से उदास हो उसे व्यवहार में धकेल दे! ऐसे भी मंदिर में हैं। सो, उन्हें पहचान कर उनसे दूर रहना। एक तो इन्द्रियाराम और अर्थाराम-इन दोनों के बीच कोई अपना बिस्तर लगा दे, तो छः महीने में तो उसे (सत्संग से-संत से) विमुख कर डालें। ऐसों को पहचान कर उनका संग नहीं करना और उसके साथ बैठना-उठना पड़ भी जाये तो क्षत्रिय की भाँति दिल मिलने नहीं देना। ऐसों से यदि दिल मिल जाये तो समझ लो बहुत खराब हुआ। इन दोनों को छोड़कर हमें तो आत्माराम होना। *प्र. 6, 58*

617. अच्छी-अच्छी खाने-पीने की चीजें, एशो-आराम की सुविधाएं,चीजें व शिष्यों के आंकड़े बढ़ाने परिश्रम करना-वह साधु का मार्ग नहीं है। उनमें लग पड़े वह निशान चूके और समय गंवाया! सो, ज्ञान सीखना। रात्रि प्रलय में ज्ञान के सिवा और कुछ भी रहने वाला नहीं और वह तो महाप्रलय होने पर भी जाने वाला नहीं। ऐसा ज्ञान तो हमें प्राप्त है। यहां हम रहें तो है, लेकिन यदि वन में रहना पड़े तब भी सुख लगे। एक ही बारी की रोटी मिले और एक बिछौना हो तो और कोई वस्त्र नहीं चाहिए। वन में रहते थे तब केवल इस खेस भर रहते। वही ठंड हटाये, धूप हटाये और दोहरा करने पर बरसात से भी बचाये। और क्या चाहिए? पर, ऐसी आदत डाली हो, तो ही हो सकता है। वर्ना तो आसन से उठाओ तो जाने-मानो सोये हुए नाग को छेड़ दिया! सो ज्ञान सीखना। *प्र. 6, 59*

618. जैसा भगवान चाहें वैसे होता है। हमें दस्त की बीमारी हुई थी, जो कभी किसी की ठीक नहीं होती, पर वह टल गई और आयु भी पच्चीस वर्ष से अधिक नहीं है व दो साल पहले-यानि संवत् 1918 के कार्तिक में मौत आकर वापिस गई। सो, जैसा भगवान को मंजूर होगा वैसा होगा।

प्र.6,60

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि. 28.4.98	मंगलवार	- अखात्रीज
(2)	दि. 4.5.98	सोमवार	- प्र.ब्र.स्व.प.पू.हरिप्रसादस्वामिजी की जन्म जयंती (धर्मज गांव में आत्मीय दिन के रूप में मनायेंगे।)
(3)	दि. 7.5.98	गुरुवार	- एकादशी, व्रत
(4)	दि. 9.5.98	शनिवार	- नृसिंह जयंती, फराली व्रत
(5)	दि. 15.5.98	शुक्रवार	- 'अनिर्देश' में आज से 14 जून '98, रविवार तक 'जपयज्ञ' का प्रारंभ रोज सुबह 6.30 से 8.15
(6)	दि. 22.5.98	शुक्रवार	- एकादशी, व्रत
(7)	दि. 23.5.98	शनिवार	- ब्र.स्व. योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि

PUBLISHED BY PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III,
Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II,
New Delhi-110 064 Tel.: 5401210

TO,